मासिक पत्रिका जनवरी 2021

“सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।”-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH–GREATER KAILASH–I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 46678389, 29240762 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल प्रधान | राजेन्द्र कुमार मंत्री | विजय भाटिया कोषाध्यक्ष

मकर संक्रान्ति पर्व का महत्व

❑ मनमोहन कुमार आर्य

सौजन्यः टंकारा समाचार, जनवरी 2021

मनुष्य सभी आवश्यक विषयों का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। जो ज्ञान उसे अधिक महत्वपूर्ण लगता है उसे स्मरण रखते हुए उससे लाभ प्राप्त करने में उसकी प्रवृत्ति बनती है। हमारे अनेक पर्व हमें उनके महत्व से परिचित कराते हैं जिन्हें मनाकर हम उससे यथोचित लाभ लेने का प्रयास करते हैं। मकर सक्रान्ति का पर्व भी ऐसा ही एक पर्व है जिसके यथार्थस्वरूप से परिचित होकर हमें ज्ञात होता है कि इस पर्व से उत्तरायन 6 माह के काल का आरम्भ होता है। इससे हमारे दिन के समय में वृद्धि और रात्रि के अन्धकार की अवधि में निरन्तर कमी आती जाती है। महाभारत के दिनों में उत्तरायन में ही हमारे क्षत्रिय व अन्य लोग अपने प्राण त्यागने को महत्वपूर्ण मानते थे। अजेय योद्धा भीष्म पितामह के जीवन का उदाहरण है कि जब उनका समस्त शरीर अर्जुन के बाणों से विध गया था और उनकी मृत्यु निकट ही थी, तब उन्होंने अपने ब्रह्मचर्य व तप के बल से अपने प्राणों व आत्मा की ऊर्ध्व गति के लिए उत्तरायन के आगमन तक रोक रखा था इसका कारण यही था कि उत्तरायन में प्राण त्यागने पर मनुष्य की उत्तम गति व मोक्ष प्राप्ति की सम्भावना होती है। उत्तरायन के प्रथम दिन मकर संक्रान्ति के दिन ही यह पर्व अज्ञात दीर्घ अवधि से मनाया जा रहा है। इससे हमें आकाश में होने वाली ज्योतिषीय घटना का ज्ञान भी होता है। यदि यह पर्व न मनाया जाता होता तो जन सामान्य मकर संक्रान्ति की घटना से शायद परिचित न होता। अतः मकर संक्रान्ति मनाते हुए हमें मकर राशि और सूर्य के उसमें प्रविष्ट होने सहित इस पर्व से दिन के समय में वृद्धि व रात्रि के समय में कमी होने की वास्तविकता को समझना चाहिये। इसका हमारे जीवन में महत्व होता है। यदि मकर सक्रान्ति के दिन व इसके बाद भी रात्रि के समय में वृद्धि व दिन के समय में कमी का क्रम पूर्ववत् जारी रहता तो इससे मनुष्य जीवन के अस्तित्व में बाधायें व समस्यायें आती। अतः इस लाभकारी परिवर्तन के दिन को हमें प्रसन्नतापूर्वक ज्ञान से पूर्ण परम्परा को अपनी भावनाओं में स्थिर कर मनाना चाहिये।

हमारी पृथिवी सूर्य के चारों ओर भ्रमण करते हुए परिक्रमा करती है। इसी से रात्रि, दिन, सप्ताह, महीने व वर्ष होते हैं। पृथिवी को सूर्य की एक परिक्रमा व चक्र पूरा करने में एक वर्ष का समय लगता है। इसे सौर वर्ष कहा जाता है। हमारी पृथिवी सूर्य की परिक्रमा एक वर्तुलाकार परिधि में करती है। इससे जो वृत्त बनता है उसे ‘क्रान्तिवृत्त’ कहते हैं। हमारे ज्योतिष के विद्वानों ने इस क्रान्तिवृत्त पर 12 भाग कल्पित किये हुए हैं। इन 12 भागों के नाम उन्होंने आकाशीय नक्षत्र पुंजों की कुछ पशुओं से मिलती जुलती आकृतियों के अनुरूप, जिन्हें राशियां कहते हैं, दिये हैं। यह आकृतियां हैं 1. मेष, 2. वृष, 3. मिथुन, 4. कर्क, 5. सिंह, 6. कन्या, 7. तुला, 8. वृश्चिक, 9. धनु, 10. मकर, 11. कुम्भ तथा 12 मीन। इन आकृतियों के समान नक्षत्र पुंजों की आकृतियां होने के कारण ही इन राशियों को यह नाम दिये गये हैं। सूर्य का भ्रमण व परिक्रमा करते हुए जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में प्रविष्ट होती है तो उसे ‘संक्रान्ति’ नाम से सम्बोधित किया जाता है। संसार में पृथिवी के एक राशि से दूसरी राशि में संचरण व प्रविष्ट होने को सूर्य

नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

का संक्रमण कहने लगे हैं। 6 माह तक सूर्य क्रान्तिवृत्त के उत्तर में उदय होता है और 6 माह तक क्रान्तिवृत्त के दक्षिण भाग में। इस प्रत्येक 6 मास की अवधि का नाम अयन कहलाता है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायन' और दक्षिण दिशा की ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं उत्तरायन काल में सूर्य उत्तर की ओर से निकलता हुआ दीखता है। उत्तरायन की अवधि में दिन का समय निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होता जाता है और रात्रि का समय दिन प्रति दिन कम होता जाता है।

दक्षिणायन काल में सूर्य दक्षिण की ओर से उदय होता हुआ दिखाई देता है। इसमें रात्रि का समय बढ़ता और दिन का समय घटता जाता है। दक्षिणायन काल में सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता है तो इसे उत्तरायन और जब कर्क राशि में संक्रान्ति करता है तो उसे दक्षिणायन के नाम से जाना जाता है। उत्तरायन में सूर्य का प्रकाश हमारी पृथिवी पर अधिक मात्रा में प्राप्त होने से इससे अनेक प्रकार से लाभ होते हैं जिससे इसका महत्व दक्षिणायन से अधिक है। उत्तरायन का आरम्भ मकर संक्रान्ति के दिन से होने से इस दिन को महत्वपूर्ण मानकर पर्व मानने की परम्परा प्राचीन काल से चल रही है। मकर संक्रान्ति के दिन से ही इसके बाद के दिन बड़े होने आरम्भ होते थे परन्तु आजकल इस दिन से लगभग 22 दिन पहले ही दिन बड़े होने लगते हैं। अब से 83 वर्ष पूर्व विक्रमी सम्वत् 1994 में पाया गया था कि मकर संक्रान्ति से 22 दिन पूर्व धनु राशि के 7 अंश 24 कला पर 'उत्तरायन' होता है। इस परिवर्तन को 1350 वर्ष लगे हैं ऐसा होने पर भी मकर संक्रान्ति के दिन ही उत्तरायन को आरम्भ मान लिया जाता है। इसका कारण प्राचीन काल से मनायी जाने वाली इस उत्तरायन पर्व प्रथा को सुरक्षित रखना प्रतीत होता है। इससे हमें यह ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में हमारे पूर्वज मकर संक्रान्ति के दिन उत्तरायन का पर्व मनाते थे और उत्तरायन उसी दिन होता भी था। यह कारण व महत्व इस उत्तरायन पर्व अथवा मकर संक्रान्ति पर्व को मनाने का है।

मकर संक्रान्ति का पर्व मध्य जनवरी मास में मनाया जाता है। इस अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है इस समय जंगल, बन, पर्वत सहित नगरों व ग्रामों आदि सभी स्थानों में शीत का आतंक छाया हुआ होता है। ऐसे समय में मनुष्य के हाथ पैर भी सिकुड़ जाते हैं। मकर संक्रान्ति से पूर्व दिनों की यह स्थिति होती है कि सूर्य के उदय होते ही वह अस्तांचल के गमन की तैयारियां आरम्भ कर देते हैं। ऐसा लगता था कि दिन रात्रि में समा रहा है। रात्रि इतनी लम्बी हो जाती है कि कठिनाई से बीतती थी। मकर संक्रान्ति के आने पर रात्रि के वृद्धि अभियान पर विराम लगता है और इसके बाद से वह छोटी होती जाती है व दिन बड़े होने लगते हैं। दिन के समय में वृद्धि होने से मकर सक्रान्ति के दिवस से आरम्भ उत्तरायन काल को देवयान कहा गया है। इसी काल में महाभारत काल व उसके बाद के ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग की इच्छा करते थे। वह ऐसा मानते थे कि इस समय देह त्यागने से उन की आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाश मार्ग से परायण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायन के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। ऐसे प्रशस्त समय पर कोई पर्व बनने से कैसे वंचित रह सकता था। इसी कारण से आर्य जाति के प्राचीन आचार्यों ने मकर संक्रान्ति, सूर्य की उत्तरायन संक्रमण की तिथि, को उत्तरायन या मकर संक्रान्ति पर्व निर्धारित किया था।

इस पर्व को मनाते हुए तिल के अनेक प्रकार के पकवान बनाकर उनका सेवन किया जाता है। वैद्यों के अनुसार शीत का निवारण करने में खाद्य पदार्थों में तिल का विशेष स्थान है। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बनाकर दान किये जाते हैं। इन लड्डूओं को इष्ट मित्रों में भी बांटा जाता है।

मकर संक्रान्ति वैदिक व आर्य पर्व है। इससे हमारी प्राचीन संक्रान्ति में पर्वों को प्राकृतिक, ज्योतिषीय वस्तु परिवर्तन आदि घटनाओं से जोड़कर मानने की परम्परा का ज्ञान होता है। ■■

AGM of Arya Samaj will be held on **Sunday, 24th January, 2021** at **12:30 pm** online **(Google Meet)**. The link of the meeting will be sent on WhatsApp before the meeting.

All are the members are requested to please attend the meeting.

संस्कार पद्धति

सौजन्य: संस्कार-चन्द्रिका

१. संस्कार का अर्थ – संस्कार का अर्थ है किसी वस्तु के रूप को बदल देना, उसे नया रूप दे देना । वैदिक-संस्कृति में मानव-जीवन के लिए सोलह संस्कारों का विधान है इसका अर्थ यह है कि जीवन में सोलह बार मानव को बदलने का उसके नव-निर्माण का प्रयत्न किया जाता है। चरक ऋषि ने कहा है-'**संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते**'-अर्थात् संस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह सद्गुणों का आधान कर देने का नाम है।

इस दृष्टि से संस्कार मानव के नव-निर्माण की योजना है। बालक का जब जन्म होता है तब वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर आता है। एक प्रकार के संस्कार तो वे हैं, जिन्हें वह जन्म-जन्मान्तरों से अपने साथ लाता है, दूसरे प्रकार के संस्कार वे हैं, जिन्हें वह अपने माता-पिता के संस्कारों के रूप में वंश-परम्परा से प्राप्त करता है। ये अच्छे भी हो सकते हैं, बुरे भी हो सकते हैं। संस्कारों द्वारा मानव के नव-निर्माण की योजना वह योजना है, जिसमें बालक को ऐसे पर्यावरण से घेर दिया जाए, जिसमें अच्छे संस्कारों को पनपने का अवसर प्राप्त हुए हों, बुरे संस्कार चाहे पिछले जन्मों के हों, चाहे माता-पिता से प्राप्त हुए हों, चाहे इस जन्म में पड़ने वाले हों-उन्हें निर्बीज कर दिया जाये।

२. मानव के नव-निर्माण की योजना-वैदिक विचारधारा मानव को शरीर-मात्र नहीं मानती। वैदिक-संस्कृति की असली योजना, वह योजना जिसके लिये इस संस्कृति ने जन्म लिया, संस्कारों द्वारा मानव का नव-निर्माण करना है। वैदिक-संस्कृति की सबसे बड़ी योजना और उस योजना का केन्द्र-बिन्दु, संस्कारों द्वारा मानव का नव-निर्माण था।

३. मानव के नव-निर्माण का आधार संस्कार-पद्धति है –अगर यह बात ठीक है कि बालक जन्म-जन्मान्तर के और माता-पिता के संस्कारों को लेकर आता है, तो प्रश्न उठ खड़ा होता है कि संस्कार-पद्धति द्वारा इस एक छोटे से जन्म में जो हम संस्कारों की प्रक्रिया करते हैं, उनसे जन्म जन्मान्तरों के जमा हुए संस्कार कैसे धुल सकते हैं। हमने गत जन्मों में न-जाने कितने कर्म किये, अच्छे किये, बुरे किये, उन सबको एक-एक करके भोगे बिना केवल इस जन्म के संस्कारों से कैसे बदला जा सकता है? क्या ये एक जन्म के संस्कार पिछले इकट्ठे हुए अनन्त जन्मों के कर्मों के बोझ को, उन कर्मों से पड़े हुए संस्कारों को मिटा सकते हैं ?

यहाँ 'संस्कार' का प्रश्न 'कर्म' का प्रश्न बन जाता है। क्या पिछले जन्म के कर्म-जन्य संस्कार को इस जन्म के 'संस्कार' से मिटाया जा सकता है? 'कर्म' के विषय में धर्म के चिन्तकों ने भिन्न-भिन्न विचारों को जन्म दिया है। कोई धर्म कहता है, मनुष्य की पीठ पर दो फरिश्ते हर समय हर काम को दो बही खातों में लिखते रहते हैं। कोई धर्म यह कहता है कि चित्रगुप्त की बही में एक-एक काम, अच्छा हो, बुरा हो, दर्ज किया जाता है। हर काम की पड़ताल होती है, हर कर्म का फल मिलता है, जब तक एक-एक कर्म का फल नहीं मिल जाता तब तक कर्म बैठा रहता है, मिटता नहीं। इन सब विचारों का आधारभूत विचार एक ही है। आधारभूत विचार यह है कि संसार का शासन कारण-कार्य के नियम से हो रहा है। कोई कार्य बिना कारण के नहीं होगा और हर कारण का कार्य अवश्य होगा। जिसे हम 'कारण' कहते हैं वह पिछले जन्म का 'कार्य' होता है, जिसे हम 'कार्य' कहते हैं वह अगले जन्म का 'कारण' बन सकता है। इस प्रकार कारण कार्य की व्यवस्था से कर्मों की श्रृंखला चलती चली जाती है। कर्मों की इस कारण-कार्य की श्रृंखला का क्या रूप है? क्या हर कर्म तब तक बैठा रहता है जब तक उसका फल नहीं मिल जाता? अगर हमारे जीवन का नियन्त्रण जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों के संस्कारों से होता है और उनके साथ माता-पिता के संस्कार भी मिल जाते हैं, जिन्हें भोगना पड़ता है, तब एक-एक कर्म का भुगतान करने के लिये इस जन्म के थोड़े से कर्म कैसे बस हो सकते हैं?

क्रमशः

नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 (पंजी.)

बी-31 / सी , कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली-110048, फोन : 46678389 ई मेल : samajarya@yahoo.in

महिला सत्संग
का

दिनांक:- 14 जनवरी 2021 से 11 फरवरी 2021

माघ मास यज्ञ

समय:- पूर्वाह्न 10:30 से 11:30 बजे

में शामिल होने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं

देखें विशेष प्रसारण आर्य सन्देश टी.वी. पर

सम्माननीय वक्तागण

आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी
धर्माचार्य
आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1

विषय :- अथर्ववेद
दिनांक: - 14-20 जनवरी एवं 09-11 फरवरी 2021 तक

डॉ. विनय विद्यालंकार जी
(अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता) एवं प्रोफेसर संस्कृत विभाग
एम.बी. राजकीय पी.जी. कॉलेज हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

विषय :- सामवेद
दिनांक: - 21 जनवरी 2021 से 27 जनवरी 2021 तक

डॉ. वागीश आचार्य जी
(प्रसिद्ध वैदिक विद्वान) एवं प्राचार्य
आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा, उत्तर प्रदेश

विषय :- यजुर्वेद
दिनांक: - 28 जनवरी से 03 फरवरी 2021 तक

डॉ. वेदपाल जी आचार्य
प्रधान
परोपकारिणी सभा, अजमेर

विषय :- ऋग्वेद
दिनांक: - 4 फरवरी 2021 से 08 फरवरी 2021 तक

Google Meet

https://meet.google.com/pmx-nnab-gfz

निवेदक

विजय लखनपाल प्रधान मो. 9899868573	राजीव चौधरी वरिष्ठ उपप्रधान मो. 9810014097	राजेन्द्र कुमार मंत्री मो. 9810045198	विजय भाटिया कोषाध्यक्ष मो. 9873422733	अमृत पाल प्रधाना मो. 9811252504	रेनु चौधरी मंत्राणी मो. 9810244491	सुधा गर्ग कोषाध्यक्ष मो. 9910296656

नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें